

भारत के युवा छात्रों में आत्महत्या की बढ़ती प्रवृत्ति का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ० धनंजय शर्मा

सहायक प्रध्यापक (समाजशास्त्र)

रानी धर्म कुँवर राजकीय महाविद्यालय, दल्लावाला-खानपुर,

हरिद्वार, (उत्तराखण्ड) मो०न०-9451301712

dsbhu2008@gmail.com

शोध सार:-

भारत में आत्महत्या की यह बढ़ती प्रवृत्ति आज एक गंभीर सामाजिक समस्या का रूप ले लिया है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो 2020 के अनुसार देशभर में कुल 12,526 छात्रों ने आत्महत्या की जबकि 2021 में यह आंकड़ा बढ़कर 13,089 हो गया। जिसमें आत्महत्या करने वाले विद्यार्थियों ने 56.51 प्रतिशत छात्र और 43.49 प्रतिशत छात्रा थी। जिसमें 18 वर्ष के कम आयु के 10,732 किशोरों में से 864 ने तो परीक्षा में असफलता के कारण आत्महत्या कर लिया। इस समस्याओं के निदान के लिए सरकार, सामाजिक संस्थाओं और शिक्षण संस्थाओं की और से हाल के वर्षों में विद्यार्थियों को काउंसलिंग के साथ उनकी पढ़ाई में मदद करने और जरूरत महसूस होने पर चिकित्सीय परामर्श उपलब्ध करवाने का प्रयास किया जा रहा है।

मुख्य शब्द:- आत्मघात, अवसाद, संवेदना, अलगाव, अकेलापन, साइबर बुलिंग।

प्रस्तावना:- गाँधी जी ने कहा कि, "सच्ची शिक्षा वही है जिसमें छात्र और छात्राएं आत्मज्ञान की अधिकतम अनुभूति कर सकें। अनुपयुक्त तरीके से चुनी गयी और अवांक्षित जानकारों को छात्रों के दिमाग में ठूसकर ऐसा कभी नहीं किया जा सकता तब शिक्षा ऐसा भयंकर बोझ बन जाती है, जो छात्रों की मौलिकता कुचल देती है और वे मशीन बनकर रह जाते हैं।"

भारत में छात्र आत्महत्या की बढ़ती दर एक सामाजिक समस्या बन गयी है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो 2021 के अनुसार, भारत में प्रतिदिन 35 छात्रों ने आत्महत्या की, खासकर कोविड महामारी के दौरान। छात्रों के शिक्षा में व्यवधान, परिवार और साथियों से अलगाव और भविष्य के बारे में अनिश्चितता के कारण छात्रों में मांसिक तनाव और चिन्ता का स्तर काफी बढ़ गया है।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अनुसार, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में 2018-2023 तक 33 छात्रों ने आत्महत्या की जबकि राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थाओं और भारतीय प्रबंधन संस्थानों में 61 अतिरिक्त आत्महत्या की सूचना प्राप्त हुई। 2022 में, छात्र आत्महत्याओं में 4.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई, प्रत्येक दिन लगभग 35 छात्रों ने आत्महत्या किया। 2021 में 13,089 आत्महत्याओं में से 864 छात्रों ने परीक्षा में असफल होने के कारण किया था।

भारतीय शिक्षा मंत्रालय के तरफ से दिये गये 5 वर्षों के (2018-2023) आँकड़ों के अनुसार आईआईटी में 39, एनआईटी में 25, केन्द्रीय विश्वविद्यालय (यूजीसी के अन्तर्गत) में 25, भारतीय सूचना औद्योगिकी संस्थानों में 2, भारतीय प्रबंधन संस्थान में 4, भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान में 3, एम्स में 13, छात्रों ने आत्महत्या किया। मेडिकल और इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी के लिए जाने माने कोचिंग हब कोटा में अगस्त 2023 तक कुल 23 छात्रों ने आत्महत्या किया जबकि 2022 में 22 छात्रों की मौत हो चुकी थी। कोटा में 2011 से अबतक कुल 121 छात्रों ने आत्महत्या किया।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो 2021 के अनुसार 13,089 छात्रों ने आत्महत्या किया था। जिसमें लगभग आधे आत्महत्या इन पाँच राज्यों महाराष्ट्र 1834 (14.0 प्रतिशत), मध्य प्रदेश 1308 (10.0 प्रतिशत), तमिलनाडू 1246 (9.5 प्रतिशत), कर्नाटक 855 (6.5 प्रतिशत) और ओडिसा 834 (6.2 प्रतिशत) से है।

राज्यवार आत्महत्या की अधिकतम दर (2021)

क्रमांक	राज्य	आत्महत्या	प्रतिशत
1.	महाराष्ट्र	1834	14.0
2.	मध्य प्रदेश	1308	10.0
3.	तमिलनाडू	1246	9.5
4.	कर्नाटक	855	6.5
5.	ओडिसा	834	6.2

स्रोत-राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो 2021

राजस्थान के कोचिंग सेंटर की मंडी कोटा शहर में विगत 27 अगस्त (रविवार) को दो छात्रों ने आत्महत्या कर लिया, ये दोनों छात्र यहाँ रहकर मेडिकल प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। कोटा में बीते एक महीने में 5 छात्रों ने आत्महत्या कर चूके थे, जबकि इस वर्ष अबतक 25 छात्रों ने आत्महत्या कर लिया है। ये छात्र असफलता और माता-पिता के सपनों को पूरा न करने का दबाव को झेल नहीं पाये, और मौत को गले लगा लिया।

मिशगन स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने अपने शोध के दौरान पाया कि जिन लोगों ने आत्महत्या के प्रयास किये, उनके मस्तिष्क में एक खास प्रकार का रसायन ग्लूटैमेट पाया जाता है। ग्लूटैमेट एक प्रकार का अमिनो एसिड है। जो तंत्रिका और कोशिकाओं के बीच संदेश भेजने का काम करता है, इसे डिप्रेसन के लिए जिम्मेदार माना जाता है। परीक्षा में असफल होने वाले बच्चे इसके लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते हैं। जिससे उनको निराशा और गुस्सा आता है। जिसके कारण आत्महत्या कर लेते हैं।

एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 15 से 19 वर्ष के उम्र के युवाओं के लिए दुनिया की सबसे ज्यादा आत्महत्या दरों में से एक है।

भारत में वार्षिक आत्महत्या के आंकड़े

क्रमांक	वर्ष	आत्महत्या	क्रमांक	वर्ष	आत्महत्या
1.	2007	6248	9.	2015	8934
2.	2008	6060	10.	2016	9474
3.	2009	6761	11.	2017	9905
4.	2010	7379	12.	2018	10,159
5.	2011	7696	13.	2019	10,732
6.	2012	6654	14.	2020	12,526
7.	2013	8423	15.	2021	13,089
8.	2014	8064	16.	2022	—

स्रोत-राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो 2021

उपरोक्त सारणी के आंकड़ों के अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि छात्रों में प्रतिवर्ष आत्महत्या का दर क्रमशः बढ़ता हुआ दिखाई देता है।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो 2021 के आंकड़ों के अनुसार यह स्पष्ट होता है कि हर 55 मिनट में देश में 5 छात्र आत्महत्या करता है, जबकि महाराष्ट्र में एक छात्र आत्महत्या कर लेता है। पिछले 5 वर्षों छात्रों द्वारा आत्महत्या करने के मामले में लगभग 52 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो एक चिन्ता का विषय है।

अधिकतम आत्महत्या प्रतिशत दर वाले राज्य

रैंक	राज्य	आत्महत्या (प्रतिशत)
1	सिक्किम	37.50
2	छत्तीसगढ़	27.74
3	तेलंगाना	27.72
4	तमिलनाडू	22.85

5	केरल	21.66
6	त्रिपुरा	19.67
7	कर्नाटक	17.48
8	पश्चिम बंगाल	15.79
9	गोवा	15.41
10	महाराष्ट्र	14.20

स्रोत-राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो 2021

भारत में सबसे ज्यादा सिक्किम के छात्र 37.50 प्रतिशत आत्महत्या करते हैं, जबकि छत्तीसगढ़ और तेलंगाना में 27 प्रतिशत से ज्यादा छात्र आत्महत्या करते हैं। तमिलनाडू, केरल, त्रिपुरा इसमें चौथे, पाँचवें और छठे स्थान पर हैं, जबकि छात्रों की आत्महत्या के मामले में महाराष्ट्र 10वें स्थान पर है, जहाँ 14.20 प्रतिशत छात्र आत्महत्या करते हैं। वर्ष 2016 में यहाँ 1350 और वर्ष 2018 में 1458 छात्रों ने आत्महत्या की, इसमें 66 प्रतिशत आत्महत्या की घटनायें मुम्बई और आसपास की हैं।

छात्रों में आत्महत्या के कारण:- छात्र-छात्राओं में बढ़ती हुई आत्महत्या की प्रवृत्ति एक सामाजिक समस्या बनती जा रही है। विगत वर्षों में विद्यार्थियों द्वारा आत्महत्या की संख्या में क्रमशः वृद्धि देखी गयी है। इन छात्र-छात्राओं में आत्महत्या की प्रवृत्ति हेतु कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं है। विभिन्न प्रकरणों में कुछ कारण समान हो सकते हैं। लेकिन आत्महत्या के निम्नलिखित कारणों जैसे व्यक्तिगत, पारिवारिक, शैक्षणिक, सामाजिक, शासकीय/नीतिगत तथा आर्थिक कारणों ने अन्तर्गत रखा जा सकता है।

व्यक्तिगत कारण:- छात्रों में भिन्न-भिन्न परिस्थितियों और कारणों से स्वयं को परिवार तथा वर्तमान समय की अपेक्षाओं के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होने के कारण कुण्ठा अवसाद की स्थिति आ जाती है। जिससे आत्मघाती कदम उठाने के निम्नलिखित कारण हैं।

(1) पढ़ाई का लक्ष्य पूरा नहीं होने के कारण उत्पन्न असफलता का भाव, सहपाठियों से प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम नहीं होने का भय।

(2) विद्यार्थियों का मन अत्यंत कोमल तथा संवेदनशील होने के कारण उनके किसी कार्य के प्रति प्रतिकूल टिप्पणी या डांट फटकार से उत्पन्न अत्यंत तनाव एवं शर्मिंदगी के अहसास से उत्पन्न अपराध बोध।

(3) विद्यार्थियों में बिना अपेक्षित प्रयास, परिश्रम तथा योग्यता के तुरंत सफल होने की महत्वकांक्षा, अपेक्षित सफलता न मिलने पर आहत भावनायें, निराशा एवं अवसाद की स्थिति।

(4) कुछ विद्यार्थियों में अध्ययन के अतिरिक्त प्रेम प्रसंगों में आबद्धता और इसमें विफल होने अथवा अस्वीकार किए जाने पर अत्यधिक उद्वेलित होकर आत्महत्या जैसा अप्रत्याशित कदम उठा लेता है।

पारिवारिक कारण:- सामाजिक संरचना में परिवार एक महत्वपूर्ण इकाई है। संयुक्त परिवार के विघटन और एकल परिवारों के प्रचलित ने बच्चों (विद्यार्थियों) में इस बदले वातावरण के द्वारा काफी प्रभावित करता है। जो विद्यार्थियों के मांसिक स्थिति को विचलित कर देता है।

(1) यदि माता-पिता दोनों के कामकाजी होने या अन्य किसी व्यवस्तताओं के कारण वे बच्चों को पर्याप्त समय एवं ध्यान नहीं दे पाते। अपेक्षित स्नेह एवं मार्ग दर्शन के अभाव में बच्चे और माता-पिता में दूरियाँ बढ़ती हैं, बच्चे में असुरक्षा की भावना आती है, तथा उसमें आत्मविश्वास की कमी होती है।

(2) संयुक्त परिवार की अपेक्षा एकल परिवार के बच्चे बहुत अकेलापन महसूस करते हैं, और उनकी मांसिक ऊर्जा को सही दिशा नहीं मिल पाती। जिसके कारण बच्चे अन्दर ही अन्दर घुटन महसूस करते रहते हैं।

(3) अभिभावक जो स्वयं नहीं कर पाये अथवा प्राप्त नहीं कर सके अपने उन सपनों/महत्वकांक्षाओं को बच्चों की क्षमता/अभिरुची/उपयुक्तता का आकलन किये बिना बच्चों के माध्यम से साकार करना चाहते हैं। इस थोपी गयी, इच्छा को पूरी करने के प्रयास में बच्चे तनाव में आ जाते हैं, जिससे कुण्ठाग्रस्त हो जाते हैं।

(4) अभिभावकों के बुरे व्यसन के कारण का वातावरण अस्वस्थ करता है। जिससे बच्चों पर इसका

विपरीत प्रभाव पड़ता है, जिससे बच्चे बुरी आदतों से ग्रसित हो जाते हैं।

शैक्षणिक कारण:— हर माता-पिता का यह सपना होता है कि उनकी संतान शिक्षित होकर कामयाबी की सीढ़ी चढ़े। परिवार के लोग अपने बच्चे से बच्चे शिक्षण संस्थानों में शिक्षा दिलाने का प्रयास करते हैं। जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति, छात्र का रुझान/उपयुक्तता व उसकी क्षमता के अभाव में यह निर्णय सदैव है। अनुकूलन नहीं होता एवं अनेपक्षित/अप्रिय परिस्थितियाँ निर्मित हो जाती हैं, जो निम्नलिखित हैं।

(1) शैक्षणिक संस्थाओं का अव्यवहारिक, बोझिल व नीरस वातावरण बच्चों में पढ़ाई के प्रति अरुचि एवं थोपी गयी प्रक्रिया की भावना उत्पन्न करता है।

(2) शिक्षको अथवा संस्था के प्रबंधन द्वारा कमजोर बच्चों के साथ दोगम दर्जे का व्यवहार पक्षपात या दूसरों के सामने डांटना, अपमानित करना भी बच्चों में हीन भावना उत्पन्न करता है।

(3) शिक्षको एवं संस्था द्वारा भी छात्र-छात्राओं पर दबाव बनाया जाकर उन्हें दिये गये मेरिट, टॉपर, हाई परसेंटेज, ग्रेड के टारगेट तनाव का कारण बनते हैं, जिससे आत्महत्या कर लेते हैं।

(4) विद्यार्थियों में अन्य विद्यार्थियों की देखा-देखी, भेड़चाल की तरह बच्चे किसी पाठ्यक्रम, विषय में प्रवेश ले लेते हैं। परन्तु कालान्तर में अपेक्षित सफलता न मिलने के कारण स्वयं को दोषी मानने लगता है और अवसाद की स्थिति में आ जाते हैं।

सामाजिक कारण:— समाज में घटित घटनाओं बदलते सामाजिक परिवेश, समाज में व्याप्त कुरीतियों, रितिरिवाजों, मूल्यों एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रचलित मापदण्डों आदि का व्यक्ति पर विशेष रूप से किशोर एवं युवा मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जिसके कारण नैतिक मूल्यों में गिरावट, भौतिकतावाद की बढ़ती प्रवृत्ति, धन एवं सत्ता को सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक मानने, दिखावटी आधुनिकता तथा सोशल मिडिया के बढ़ते प्रभाव आदि का सर्वाधिक प्रभाव विद्यार्थियों पर हो रहा है।

शासकीय कारण:— वर्तमान शिक्षा प्रणाली भौतिकवादी एवं निष्पूरता की सीमा तक घोर प्रतिस्पर्धात्मक है, मूल्य आधारित शिक्षा में कमी आयी है। शिक्षा प्रणाली व्यवहारिक न होने के कारण वह स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और स्वरोजगारन्मुखी नहीं है। अतः परीक्षा उत्तीर्ण करने, उपाधि प्राप्त करने के वावजूद युवा जीविकोपार्जन हेतु शिक्षित/प्रशिक्षित नहीं होता और उसे अपना भविष्य अंधकारमय दिखता है जिससे वह अवसाद में चला जाता है।

आर्थिक कारण:— वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अत्यंत महँगी हो गयी है, जिससे बच्चों में मन में पढ़ाई के साथ-साथ आर्थिक बोझ का दबाव भी रहता है। जिससे वांछित सफलता प्राप्त न होने पर छात्र-छात्राओं के मन में आत्मघाती कदम उठाने की प्रवृत्ति को बल मिलता है।

साइबर बुलिंग:— समाज में साइबर बुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न की घटनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं। जिसके कारण छात्रों द्वारा आत्महत्या करने के प्रवृत्ति का बढ़ रही है। साइबर बुलिंग के कई स्वरूप हो सकते हैं, जैसे-उत्पीड़न, साइबर स्टॉकिंग या सोशल मीडिया के माध्यम से डराना धमकाना।

छात्रों में आत्महत्या रोकने हेतु सुझाव:— छात्र-छात्राओं द्वारा किये जाने वाले आत्महत्या क्षणिक आवेश में घटित होने वाली एक घटना नहीं है। वर्तमान भौतिकवादी युग ने विभिन्न परिवारिक सामाजिक, शैक्षणिक आर्थिक अथवा व्यक्तिगत कारक छात्र-छात्राओं में अवसाद की स्थिति निर्मित करते हैं। परिवार मित्र, शैक्षणिक संरक्षायें आदि द्वारा विद्यार्थी के बदलते हुए, मनोभावों का आकलन नहीं कर पाने तथा इस पर ध्यान नहीं देने के कारण अवसाद और गहन हो जाता है। जिसकी परिणती आत्महत्या के रूप में होती है।

सामान्यतः छात्र-छात्राओं में गहन अवसाद की स्थिति आने पर कुछ "सुसाइड वर्निंग साइन्स" प्रदर्शित करते हैं। यदि उनकी बातचीत व्यवहार व मूड को ध्यान से देखें और सुनें तो निम्नलिखित बातें सुनने को मिलते हैं। जो छात्रों द्वारा उठाये गये घातक कदम के संकेत मिल सकते हैं। जैसे— "हम परिवार और दुनिया पर बोझ हैं", "हम अकेले व असहज हैं", "आजकल मुझे कुछ सृजना ही नहीं", "अब जीकर क्या करेंगे", "मुझे कोई पसंद नहीं करता", "मैं अपने जीवन में कुछ नहीं कर पाया" इत्यादि।

सामान्य व्यवहार:— वह स्वयं को परिवार/मित्रों से अलग-थलग कर लेता है, धीरे-धीरे ड्रग्स व अल्कोहल का उपयोग करने लगता है, जो उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। आत्महत्या से संबंधित तरीकों को

इंटरनेट पर सर्च करता है, टी.वी. पर ऐसे दृश्यों को ध्यान से देखता है। इसे नींद नहीं आती है, अथवा अतिनिद्रा का शिकार हो जाता है।

छात्रों के लिए कुछ सुझाव जिसको अपनाकर अपना जीवन आगे बढ़ा सकते हैं:-

1. छात्र अपनी सामर्थ्य को पहचानें।
2. छात्र स्वयं पर विश्वास करना सीखें।
3. छात्र लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए 100 प्रतिशत प्रयास करें।
4. छात्र कभी भी असफल होने पर डर की भावना न पालें।
5. छात्र को हमेशा आत्मविश्वास और अति-आत्मविश्वास में अंतर करना सीखें।
6. छात्र हमेशा सकारात्मक सोच रखना चाहिए।
7. छात्र को हमेशा वर्तमान में जीना चाहिए।
8. प्रत्येक छात्र को दिनचर्या निर्धारित करना चाहिए।
9. योग, व्यायाम, मनोरंजन, खेलकूद आदि को दिनचर्या में सम्मिलित करना चाहिए।
10. छात्रों को अपनी पिछली गलतियों से सीखना चाहिए।
11. छात्रों को अपने परिवार से आत्मीयता रखना चाहिए।
12. छात्रों को अपने अभिरूचियों के अनुसार अन्य गतिविधियों से जुड़ना चाहिए।
13. छात्रों की परीक्षा की तैयारी प्रारम्भ से ही करनी चाहिए।

छात्र-छात्राओं में आत्महत्या रोकने के सुझाव:-

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है कि, "शिक्षा का अंतिम लक्ष्य ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण होना चाहिए जो ऐतिहासिक कारणों से निर्मित परिस्थितियों और प्रकृति जन्य विपत्तियों से संघर्ष कर सके।"

शिक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता का विषय होना चाहिए। स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा पृथक-पृथक है। जिनकी एक दूसरे से आन्तरिक रूप से समन्वय हो। शिक्षकों को शिक्षण तथा उससे जुड़ी अकादमिक खेलकूद गतिविधि के अतिरिक्त अन्य कार्य में संलग्न नहीं किया जाना चाहिए। इससे शिक्षक का मानसिक तथा प्राथमिक अध्यापन के अपने मूल कार्य पर केन्द्रित न होकर विभिन्न शासकीय योजनाओं का क्रियान्वयन हो जाता है।

माता-पिता को अपनी महत्वकांक्षाओं नहीं थोपना चाहिए तथा बच्चों को उसकी योग्यता, अभिरूचि, उपयुक्तता (एप्टीट्यूड) तथा महत्वकांक्षा का आकलन किसी विशेषज्ञ से कराना चाहिए न की अन्य लोगों कि देखा-देखी। अभिभावकों को यह स्वयं भी समझना होगा और बच्चों को भी समझाना होगा की केवल आईएएस, आईपीएस, डॉक्टर, इंजीनियर बनने तक ही कैरियर सीमित नहीं होता, आज कैरियर के लिए विभिन्न विकल्प उपलब्ध हैं। बच्चों की योग्यता अभिरूचि के अनुरूप प्लान 'ए' प्लान 'बी' एवं प्लान 'सी' के विकल्पों का निर्धारण करें।

आत्महत्या से पूर्व में उल्लेखित प्रमुख कारणों से उत्पन्न छात्रों के व्यवहार पहचान कर इस समस्या को दूर किया जा सकता है:-

- (1) अवसाद:- वे छात्र जो **Clinically depressed** रहते हैं समान्यता स्वयं अथवा दूसरों के लिए और वर्तमान परिस्थितियों के प्रति नकारात्मक सोच रखते हैं।
- (2) अलगाव या अकेलापन:- छात्र जब यह समझने लगता है कि माता-पिता सगे संबंधी उसकी देखभाल नहीं करते या समझने लगता है कि इसके मरने या जीने से किसी को कोई प्रभाव नहीं पड़ता है तो वह अपने आप को अकेलेपन के कारण उपेक्षित महसूस करने लगता है।
- (3) अयोग्य समझना:- जब छात्र माता-पिता के दबाव पर अच्छे प्रदर्शन न करने पर छात्र अपने आपको अयोग्य समझने लगता है, तो वह तनाव में रहने लगता है।
- (4) ड्रग्स व शराब:- ड्रग व अल्कोहल लेने के पाश्चात युवा वर्ग आत्मघात के प्रयास को गंभीरता से नहीं लेते हुए कम आंकते हैं और वे जाने-अनजाने में ऐसी घटना को अंजाम देने के प्रयास में अपने जीवन को समाप्त कर लेते हैं।

आत्महत्या के बढ़ते मामलों को देखते हुए कुछ दिन पहले राजस्थान के कोटा जिला प्रशासन ने छात्र-छात्राओं के हॉस्टल या पीजी वाले कमरों में स्प्रिंग लोडेड फैन लगाने को निर्देश जारी किया

है। ताकि अगर कोई छात्र पंखे से लटककर जान देने की कोशिश करें तो पंखा नीचे आ जाये और उसकी जान बच सके। उत्तर प्रदेश के आईटीएम इंजीनियरिंग कालेज, गोरखपुर के बीटेक कम्प्यूटर साइंस, प्रथम वर्ष के चार छात्रों अविनाश, वरुण, अनुराग, अनुप्रास ने मिलकर एक ऐसे स्मार्ट वायरलैस ऐंटी सुसाइड सीलिंग फैन रॉड का आविष्कार किया है जो घर, होटल या अन्य कहीं भी कोई व्यक्ति आत्महत्या करने की कोशिश करेगा तो यह डिवाइस सचेत कर देगी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों द्वारा आत्मघाती कदम उठा लेना के पीछे अनेक कारण विद्यमान हैं। इन कारणों को मूलतः पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक एवं मनोवैज्ञानिक श्रेणियों में बाटा जा सकता है और इनमें भी अनेकानेक परिस्थितियाँ हैं, जिनके चलते इस तरह की दुःखद और पूरे समाज को झकझोर कर रख देने वाली घटनायें घटती हैं।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो 2021 के आंकड़ों से पता चलता है कि कई राज्यों में हजारों छात्र-छात्राओं ने आत्महत्या कर लिया। महाराष्ट्र इस बात का गवाह है कि छात्रों की आत्महत्या की संख्या में निरन्तर वृद्धि देखी जा सकती है।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो 2021 के अनुसार भारत में कुल 13089 आत्मघाती प्रकरणों में से 864 परीक्षा में असफल होने से जुड़ी थी। छात्र-छात्राओं में प्रेम प्रसंग के कारण आत्महत्या की घटनायें बढ़ रही हैं। परिवार के लोग बच्चों का पुराने रिति रिवाज व परम्पराओं के विरुद्ध जा कर तथा समाज का यह परिवर्तन स्वीकार करने में असहज महसूस कर रहे हैं। परन्तु व्यक्ति को समयानुसार अपने स्वभाविक परम्पराओं नीतिओं तथा सोच में बदलाव करते रहना चाहिए। अभिभावकों का बच्चों के साथ संवादहीनता भी आत्महत्या का प्रमुख कारण है, जिसमें सभी को बदलाव लाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथः—

1. बर्टोलोटे जे.एम., प्लेशमैन ए.डीलियोडी, बासरमैन, डी.(2003) "आत्महत्या और मानसिक विकार" क्या हम पर्याप्त जानते हैं। 2003, 183:पृ0सं0, 382-3
2. विजय कुमार एल, जॉन एस, पिकिस जे. व्हाइटफोर्ड एच.(2005) "विकासशील देशों में आत्महत्या" इंडियन जर्नल ऑफ साइकेट्रिक, नई दिल्ली (2) 2005, पृ0सं0, 112-9,
3. श्रीनिवासन टी.एन. धारा आर.(2003) "स्किजोफ्रनिया रोगी जो खुद को मारते हैं" इन विजय कुमार एल, संपादक-आत्महत्या की रोकथाम, ओरियंट लॉन्गमैन, 2003 पृ0सं0-163-8
4. गहलोत, पी.एस., नथावत एस.एस.(1983) "भारत में आत्महत्या और पारिवारिक नक्षत्र" एम.जे. साइकोथेर, इंडियन जर्नल ऑफ साइकेट्रिक, नई दिल्ली, 1983, 37: पृ0सं0 273-8
5. मृजेक, पी.जे. हैगर्टी, आर.जे..(1994) "मानसिक विचारों के लिए जोखिम गठन करना: निवारक हस्तक्षेप अनुसंधान के लिए फ्रंटियर्स। वाशिंगटन, डी.सी., नेशनल एकेडमिक ऑफ प्रेस 1994, पृ0सं0 321-32
6. भारत में दुर्घटनात्मक मृत्यु एवं आत्महत्यायें,(2021) "भारत में आत्महत्यायें" राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो, गृह मंत्रालय, राष्ट्रीय राजमार्ग, महीपालपुर, नई दिल्ली, पृ0सं0.196-206
7. विजय कुमार, एल.(2007) "आत्महत्या और इसकी रोकथाम: भारत में तत्काल आवश्यकता" इंडियन जर्नल ऑफ साइकेट्रिक, नई दिल्ली, 2007 अप्रैल-जून 49(2), पृ0सं0, 81-84
8. मध्यप्रदेश विधान सभा, "छात्रों द्वारा मानसिक तनाव के कारण आत्महत्या किये जाने संबंधी सामाजिक समस्या के समाधान हेतु गठित समिति का प्रतिवेदन" शासकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, भोपाल, (24 मार्च, 2017 को विधान सभा में प्रस्तुत)
9. सिंह, सुनिल कुमार (2023) "कुल सुसाइड के मुकाबले ज्यादा तेजी से बढ़ रहे छात्र सुसाइड, जानिए वे पहले क्या संकेत देते हैं और क्या है उपाय, दैनिक जागरण, ई-पेपर, 6 मई 2023 को अपडेट।
10. कुमार, केशव (2023), "बीते 5 सालों में आईआईटी-आईआईएम समेत उच्च शिक्षण संस्थानों के 98 छात्रों ने की आत्महत्या, सरकार ने संसद को बताया" जनसत्ता, नई दिल्ली, ई-पेपर, 30 जुलाई 2023 को अपडेट।